27-3-03

मास्टर मुक्तिदाता बन दु:खी अशान्त आत्माओं को सकाश दे आराम की अनुभूति कराओ

(दिल्ली ओ.आर.सी. में डबल विदेशी भाई-बहनों की NCO मीटिंग में अव्यक्त सन्देश)

आज आप सबकी यादप्यार लेकर बाबा के पास पहुंची तो जाते ही मैने देखा कि हमारे पहुंचने के पहले ही बाबा ने आप सभी को फ़रिश्तों की सभा के रूप में इक्ट्ठा किया हुआ था, आप सभी बहुत सुन्दर लाइट के चबूतरे के बीच में बैठे हुए थे और हर एक के सिर पर लाइट का क्राउन चमक रहा था। मैंने कहा बाबा मैं तो सबकी यादप्यार लेकर आई थी, पर आपने तो पहले ही इन्हों को बुला लिया है। तो बाबा ने कहा कि ये दिल्ली दरबार में आये हैं, तो दिल्ली है विजय का स्थान। यह दिल्ली दरबार है, तो बाबा ने भी दरबार लगाई हुई है। बाबा ने कहा, अभी देखना मैं आपको एक दृश्य दिखाता हूँ। तो क्या देखा कि आज बाबा की दृष्टि से ही सब कुछ चल रहा था। कोई स्विच वगैरा नहीं था लेकिन दृष्टि ही जैसे स्विच थी, बाबा ने दृष्टि दी तो मैंने क्या देखा, कि लाइट का एक विमान था और उसमें दादी जी और मधुबन के कुछ भाई बहनें आ रहे हैं। वह विमान बहुत ही सुन्दर था और हम लोगों के सर्किल के बीच में धीरे-धीरे उतरा तो सभी को बहुत मजा आया।

फिर बाबा ने कहा देखो आप सभी जीरो से लगन लगाने वाले मेरे हीरो बच्चे हो। आप सबको विदेश में बहुत मेहनत करनी पड़ती है इसलिए बाबा ने आपको वतन की सैर करने के लिए बुलाया है। बाबा ने कहा इसमें कई बच्चे हैं जो डबल काम करते हैं। लौकिक जॉब के साथ अलौकिक सेवा भी

करते हैं, और कई सेन्टर पर भी रहते हैं लेकिन वहाँ बहुत बिज़ी रहते हैं इसलिए यहाँ रेस्ट के लिए वतन में बुलाया है।

फिर बाबा ने दादी और दादी जानकी को बांहों में लेकर कहा चलो सैर कराता हूँ। हम सब पीछे-पीछे चलते गये, चलते गये, तो सामने देखा कि एक बहुत सुन्दर लाइट की पहाड़ी थी, उस पर चारों तरफ लाइट ही लाइट थी। हम सबको बाबा ने कहा कि इस पहाड़ी के ऊपर जाओ। आज बाबा की दृष्टि ही बटन का काम कर रही थी। जब बाबा ने सभी को दृष्टि दी तो क्या हुआ! पहले हम जो सब फरिश्ते रूप में थे वे एकदम आत्मा रूप में हो गये और सभी आत्मायें ऊपर उड़ने लगी और उड़ते-उड़ते पहाड़ी पर जाकर सभी आत्माओं का जैसे एक गोला बन गया। वह गोला बहुत सुन्दर लग रहा था। तो बाबा ने कहा कि अभी एक्सकर्शन के साथ सेवा भी करनी है। इतने में फिर बाबा ने सभी को फरिश्ते रूप में इमर्ज किया और नीचे वर्ल्ड का गोला था लेकिन उस गोले पर शरीरधारी मनुष्य नहीं थे, आत्मायें थी और उन आत्माओं का जो रंग था वो जैसे राख का रंग होता है, ऐसे रंग की आत्मायें गोले के ऊपर थी, उसमें भी जैसे कोई तेज ब्ल्यु रंग होता है, और कोई थी जो हल्का-हल्का जैसे धूप से छिपी हुई लाइट होती है, ऐसे पर्दे के अन्दर लाइट रूप में दिखाई दे रही थी। तो बाबा ने कहा अभी इन आत्माओं को आप सकाश दो। तो नीचे का गोला भी घूम रहा था और ऊपर हम जिस गोले पर थे वह भी घूम रहा था। और हम फरिश्ते झुण्ड के रूप में खड़े थे। सभी के दोनों नयनों से और मस्तक से लाइट निकल रही थी जो लाइट सभी आत्माओं के ऊपर पड़ रही थी। बाबा ने यह दृश्य दिखाया और कहा, अच्छा बच्ची अभी सेवा तो की, ऐसे ही सदैव इन आत्माओं को इमर्ज करके तुम्हें सकाश देनी है क्योंकि आत्मायें बहुत दु:खी हैं, चिल्ला रही हैं। वे समझती हैं कि कुछ सहारा मिले, कोई सहारा दे। जैसे कोई बहुत भूखा, अप्राप्त होता है, उसको कुछ भी थोड़ा मिल जाए तो खुश हो जाते हैं, इसी रीति से आज मनुष्यों की हालत है। इसलिए जब भी आपको फ्री समय मिलता है, कामकाज नहीं है

तब बीच-बीच में सारे दिन में कई बार इन आत्माओं को सकाश दो। ऐसे नहीं सिर्फ अमृतवेले दो लेकिन चलते-फिरते भी मन्सा सेवा द्वारा आप इन आत्माओं को सकाश देते रहो क्योंकि सब बहुत दु:खी हैं। बाबा को इन सबको थोड़ी अंचली प्राप्त कराके मुक्तिधाम में भेजना है। तो जैसे बाबा मुक्तिदाता है ऐसे आप बच्चे भी मास्टर मुक्तिदाता हो। तो इन्हों को जब अंचली मिलेगी तब उस शक्ति से ये आत्मायें परमधाम जायेंगी। इसलिए हे मुक्तिदाता बच्चे, आप इन्हों को बीच-बीच में सकाश देकर दु:ख अशान्ति से मुक्त करो। आपकी सकाश से वे भी परमधाम में जाकर आराम करेंगी, मुक्ति को प्राप्त होंगी। ऐसे बाबा बहुत प्यार से बोल रहे थे। दादियाँ भी हमारे साथ थीं। दादी तो बहुत खुश हो रही थी।

फिर बाबा ने कहा, अच्छा अभी सेवा तो की अभी फिर सैर करो। तो बाबा हम सबको ऐसे स्थान पर ले चले जहाँ बगीचा भी था, झरने भी थे। तो बाबा ने कहा इस झरने के नीचे आप सब खड़े हो जाओ। वह झरना भी लाइट का था, कहाँ सफेद लाइट, कहाँ हरी लाइट, कहाँ लाल लाइट के झरने, कहाँ गोल्डन लाइट के झरने बह रहे थे और बगीचा भी था। तो जब सभी झरने के नीचे खड़े हो गये तो जैसे आधा सर्कल बन गया और वह वैराइटी लाइट के बीच बहुत सुन्दर लग रहा था। फिर बाबा ने दोनों दादियों को कहा कि देखो तुमको यह संगठन अच्छा लग रहा था, तो अभी इस संगठन को विश्व सेवा के निमित्त बनना है और आप दोनों को, इन सबको साथ लेकर, बाबा को हाथ देकर विश्व कल्याणी बन सारे विश्व का कल्याण करना है।

फिर दोनों दादियों को बाबा ने कहा कि इन्हों को ऐसी दृष्टि दो जो आज संस्कार मिलन हो जाए। तो दोनों दादियां एक दो को देख मुस्कराने लगी। तो बाबा ने कहा कि संस्कार मिलन तो होना है ना। फिर बाबा ने कहा अच्छा आज एक नई रास कराता हूँ। तो बाबा सभी को बगीचे में ले आये और जैसे कृष्ण के साथ गोपियों का सर्कल दिखाते हैं ऐसे सभी ने एक दो का हाथ

पकड़ा और जैसे हैण्डशेक करते हैं, ऐसे सब एक दो के सामने हो गये। तो बाबा ने कहा अभी एक दो को दृष्टि दो। ऐसे लग रहा था जैसे बाबा सभी को कह रहा है कि 1- वृत्ति में शुभ भावना, शुभ कामना रखो। 2- आत्मिक रूप में एक दो को दृष्टि दो और 3- संकल्प करो कि यह एक एक श्रेष्ठ आत्मा है। एक दो की विशेषता देखो। ऐसे बहुत सुन्दर स्नेह मिलन हो रहा था और यह तीन बातें जैसे सभी की वृत्तियों में, नयनों में इमर्ज दिखाई दे रही थी। ऐसे सभी को बाबा ने कहा आज ये विचित्र रास मैंने आप लोगों को कराई। ऐसे ही सदा एक दो को देखते, हाथ में हाथ मिलाते, एक दो के सहयोगी स्नेही बन करके यह ३ बातें सदा स्मृति में रखना तो स्नेह मिलन, संस्कार मिलन सब हो जायेगा। ऐसे बाबा ने ये दृश्य दिखाया। ऐसे लग रहा था जैसे संस्कार मिलन का वायुमण्डल हो गया है। लास्ट में कहा कि देखो कहाँ-कहाँ से मेरे बच्चे आये हैं और आये भी गिफ्ट के स्थान पर हैं, तो इन्हों को गिफ्ट तो देनी ही है। तो बाबा ने दादी जी को कहा आप इन सबको अपने हाथ से गिफ्ट दो। वह गिफ्ट भी बहुत सुन्दर थी - कमल का पुष्प लाइट का था, उसमें अष्ट शक्तियों की 8 लाइटस थीं। वह 8 लाइटस और कमल का शेप बहुत सुन्दर चमक रहा था। दादी जानकी, दादी के हाथ में यह गिफ्ट दे रही थी और दादी अपने हाथ से सबको दे रही थी। दादी तो इतनी प्रेम में समाई हुई थी, बस बाबा को देखे, हर एक को देखे। जैसे स्नेह में कोई लवलीन होता है, ऐसे लवलीन हो सभी को सौगात दे रही थी। फिर बाबा ने सभी पर अपना हाथ ऐसे घुमाया जैसे वरदान का हाथ घूम रहा है। फिर बाबा ने कहा, अच्छा बच्चे अभी जाकर प्लैन बनाओ और प्रैक्टिकल में लाओ। ऐसे कहते सभी को यादप्यार दी और मैं साकार वतन में आ गई। ओम् शान्ति।